राग–द्वेष को छोडने की आवश्यकताः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, जो पदार्थ मिले उसी में संतुष्ट रहने का प्रयास करें, महिला शक्ति का अधिवेशन शुरू, तीन दिन तक चलेगा

केलवाः 22 सितम्बर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वे अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने राग–द्वेष को छोडने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि अहिंसा की उत्कृष्ट साधना के लिए हमें इसका परित्याग करना होगा। व्यक्ति में द्वेष की भावना उस समय प्रबल होती है जब उसमें अपनी किसी प्रिय वस्तु के प्रति दिलचस्पी बढती है। अगर वह इसके प्रति त्याग की भावना का जीवन में समावेश करें तो द्वेष स्वतः ही समाप्त हो सकता है।

आचार्यश्री ने उक्त उद्‌गार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास में गुरुवार को दैनिक प्रवचन के दौरान व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि संबोधि के पांचवें अध्याय में अहिंसा को विस्तारपूर्वक परिभाषित किया गया है। किसी व्यक्ति की ओर से की जा रही निन्दा से भी द्वेष का जन्म होता है। प्रशंसा करने से राग भाव आ सकता है। सुन्दर रुप से राग और कुरूप चेहरे से द्वेष का भाव उत्पन्न होता है। उत्तराध्यन के 32वें अध्याय में उल्लेखित है कि जो परम पदार्थों से दूर हो जाए उसे आत्मा की अनुभूति का अहसास होता है। राग–द्वेष के बिना भी जीवन को जीया जा सकता है। मनोज्ञ पदार्थ से व्यक्ति को मन विचलित हो जाता है। इनके प्रति सजगता लाने की आवश्यकता है। यह स्थायी नहीं है। आचार्यश्री ने कहा कि शरीर एक दिन नष्ट हो जाएगा। संपति और अन्य भौतिक संसाधन भी आज हमारे पास है, कल हो न हा। इस बारे में कहा नहीं जा सकता। इसलिए व्यक्ति को मृत्यु निकट आने की अवस्था में धर्म की आराधना की ओर अग्रसर होना चाहिए। इससे मूर्च्छा का भाव कम होता है। जहां संयोग होता है वहां वियोग की स्थिति भी बनती है। बाहरी संयोग और वियोग को प्राप्त करने की आवश्यकता है। यदा कदा धार्मिक कार्यक्रमों के दौरान गीतों का संगान किया जाता है। अतित्य अनुप्रेक्षा का भाव प्रकट करने वाला होता है। यह श्रवण में लगती सामान्य है, लेकिन अतित्यता का मोह बनता है। इसके भाव से राग–द्वेष कम हो जाता है। उन्होंने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ ऐसा संघ है जिसमें दीक्षा लेने का सौभाग्य राज योग वाले को ही मिलता है। राग आना आसान है , लेकिन इसका परित्याग करना बहुत मुश्किल है। इसीलिए वीतराग बना है। राग चला गया तो द्वेष भी चला जाएगा। पूर्णतः वीतराग बनना मुश्किल ही

नहीं बहुत कठिन है। जिसके प्रति ज्यादा आकर्षण है उसे त्यागने की प्रवृति बनाने की आवश्यकता है। इससे राग कम होगा और समता का भाव बना रहेगा।
मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि व्यक्ति जब जन्म लेता है तो उसके साथ अनेक संभावनाएं जन्म लेती है। हर व्यक्ति में क्षमता और कुछ करने का बल दिखाई देता है। अधिकतर व्यक्ति वातावरण के साथ प्रवाह गति से जीवन को जीने का प्रयास करता है। आचार्यों ने कहा है कि जो व्यक्ति अनुस्त्रोत में बहता है वह कभी भी इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित नहीं हो पाता। जैसी दुनियां चल रही हैं उसी के अनुरुप चलता है। हम अगर प्रतिस्त्रोत पर चलेंगे तो शिखर पर आरुढ हो सकेंगे। अनेक परेशानियों और कठिनाईयां हमारे सामने आएगी, लेकिन इन्हें चीरकर ही प्रतिस्त्रोत प्राणी बन सकता हैं। भोग अनुस्त्रोत में बहने वाला मार्ग है। संयोजन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

भीतरी ऊर्जा को जगाने की आवश्यकताः साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

महिला शक्ति का अधिवेशन शुरू, केलवा में देशभर की महिलाओं का लगा जमघट, पहले दिन विभिन्न सत्रों में हुई महिला कल्याण पर चर्चा

केलवाः 22 सितम्बर

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने महिलाओं से आह्वान किया कि वे अपने भीतर की ऊर्जा को सामने लाने का प्रयास करें। इसे बढाना, जगाना और समुचित प्रयोग करने की आवश्यकता है। गुरु के प्रति श्रद्धा, समर्पण एवं भाव से ऊर्जा का संचार होता है। जिस स्त्रोत से यह हमारे मन में आती है। उन उपायों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। साध्वी प्रमुखा ने उक्त विचार कॉन्फ्रेन्स हॉल में गुरुवार से शुरू हुए अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के 36वें राष्टीय महिला अधिवेशन में देशभर से आई महिलाओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।
उन्होंने कहा कि महिलाओं को इस बात पर मनन करने की आवश्यकता है कि वे भीतर से मजबूत हुई अथवा नहीं। मासिक, त्रमासिक और वार्षिक योजनाओं को अंतिम रुप देने की आवश्यकता है। हमें छोटी–छोटी समस्याओं में उलझने की बजाय समस्या का मूल खोजने का प्रयास करें। आत्म विश्वास कहां क्षीण होता है। इनका अध्ययन करके समाधान खोजने का प्रयास करें। उन्हें इस बात को अपने मन से निकालने की आवश्यकता है कि उनका स्थान समाज में दोयम दर्जे का है। व्यक्ति का निर्णय कभी

गलत नहीं हो सकता। चिंतन मौलिक और स्वतंत्र हो तो आंख मूंदकर भी निर्णय लिया जा सकता है। हमार नजरिया काम में साधक और बाधक बनता है। सकारात्मक सोच वाला शून्य से सबकुछ निकाल लेता है। बहनों की सोच में अच्छे के प्रति प्रमोद और बुरे के प्रति विरोध होना चाहिए। धर्म के प्रति आस्था हो और प्रवृति और परिणाम दोनों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतप्रज्ञा ने कहा कि हमारे भीतर अनंत शक्ति है। उसे पहचानने की जरुरत है। भारतीय संस्कृति में शक्ति की पूजा हो रही है। शक्ति के तीन केन्द्र है। पहला शक्ति, दूसरा केन्द्र नाभी और तीसरा केन्द्र ज्ञान केन्द्र है। शक्ति को जागृत करना है तो दृष्टिकोण को बदलना होगा। एकाग्रता के विकास के साथ मानसिक शक्ति का संवर्धन करना होगा। मंडल प्रभारी साध्वी कल्पलता ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के पास तेजस शरीर है। शरीर, मन और दिमाग से कमजोर व्यक्ति अपना अस्तित्व नहीं रख पाता। जिस महिला में निर्णय करने की क्षमता है। वह सर्वाधिक शक्ति संपन्न होती है। सुखी, समृद्ध और सही ढंग से जीने में प्रतिकूल, अनुकूल और कठिन परिस्थिति का सामना किया जा सकता है। इससे पूर्व उद्घाटन सत्र में आचार्यश्री महाश्रमण ने अधिवेशन का समय अच्छा बताते हुए प्रत्येक सत्र से कुछ ग्रहण करने की महिलाओं को प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि अतीत की समीक्षा करें और भविष्य की योजनाएं बनाकर प्रत्येक कार्य को संपादित करने का प्रयास करें। अधिवेशन में बहुत कुछ प्राप्त करने की आवश्यकता है। राष्टीय कार्यसमिति की पदाधिकारियों ने श्रद्धा समर्पण किया। सुबह नौ बजे शुरू हुए द्वितीय सत्र में हैदराबाद महिला मंडल की ओर से मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। राष्टीय अध्यक्ष कनक बरमेचा ने अधिवेशन की उद्घोषणा और अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। महिला मंडल केलवा की अध्यक्ष फूलीदेवी बोहरा, मंत्री रत्ना कोठारी, स्नेहलता कोठारी, कुसुम सांखला, पुष्पा मादरेचा, चन्दा कोठारी और कंचनदेवी मेहता ने स्वागत गीतिका का संगान किया। संयाजन श्रीमती नीलम सेठिया ने किया। संयोजिका श्रीमती कल्पना बैद रही।

the inner power...
ऊर्जा
अखिल भारत
तेरापंथ समवसरण
जय